किन्हीं राहों उन राहों पर चलना है:- ओमशान्ति प्रातःक्लास 15-12-67

ओमशान्ति। किन राहों पर चलना है? गुरु के राहों पर चलना है। यह कौन सा गुरु है। सदगुरु। उठते-बैठते मनुष्यों के मुख से निकल जाता है वाह गुरु। गुरु की महिमा है ना। अब तो यह है सदगुरु। सिख लोग भी कहते हैं सदगुरु अकाल मूर्त है। जिसको फिर अकाल तख्त भी कहते हैं। नाम तो बहुत रख दिये हैं। समझते नहीं हैं, क्योंकि घोर अंधियारे में हैं। अंधियार से निकालने वाला है ज्ञान सूर्य। ज्ञान अंजन सदगुरु दिया.. तो कहेंगे वाह सदगुरु। गुरु तो अनेक हैं। वाह सदगुरु किसको कहेंगे। किसकी महिमा गावेंगे। सदगुरु एक ही बा.. है। भक्ति मार्ग के तो ढेर गुरु हैं। कोई किसकी महिमा करते, कोई किसकी महिमा करते हैं। बच्चों की बुधि में सच्चा सदगुरु एक ही है। जिसकी ही वाह वाह मानी जाती है। सच्चा सदगुरु है तो जरूर झूठा भी होंगे। झूठ भी हैं सच्च भी है। सच्च होता है संगम पर। भक्ति मार्ग में भी सच्च की महिमा गाते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप ही सच्चा है जो ही लिबरेटर गाईड भी बनता है। आजकल के गुरु लोग तो गाईड बनते हैं गंगा स्नान पर वा तीर्थ आद पर ले जाने। यह सदगुरु तो ऐसा नहीं है। जिसको सभी याद करते हैं हे पतित-पावन आओ। पतित-पावन सदगुरु को ही कहा जाता है। वह ही पावन बना सकते हैं। वह गुरु लोग पावन बना न सके। वह कोई ऐसे नहीं कहते हैं मामेकं याद करो। भल गीता भी पढ़ते हैं परन्तु अर्थ का बिलकुल ही पता नहीं है। अगर समझते सदगुरु एक है तो अपन को गुरु नहीं कहलाते। ड्रामा अनुसार भक्ति मार्ग के डिपार्टमेन्ट ही अलग हैं। जिसमें अनेक गुरु, अनेक भक्त हैं। यह तो एक ही है। जो पहले नम्बर में वह लास्ट नम्बर में। जो लास्ट नम्बर में हैं उनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। तुम अभी पहले नम्बर में जाते हो बाकी सब खतम हो जानी हैं। यह देवी देवताएं पहले नम्बर में आते हैं ना। अभी लास्ट में हैं। बाप आकर इन्हों को सतयुग का बादशाही देते हैं। तो और सब को आटोमेटकली वापस जाना पड़ता है। सर्व का सदगति दाता एक ही है। तुम समझते हो कल्प के संगम युग पर ही देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। तुम पुरुषोत्तम बनते हो। बाकी और कोई गुरु लोग कोई काम नहीं करते। जो भी मनुष्य गुरु हैं उन्हों को भक्ति मार्ग के लिए जो कुछ करना था सो किया। कोई भक्त गुरु मुक्ति-जीवन मुक्ति दे नहीं सकते। वह अपनी भी मुक्ति नहीं कर सकते। गाया भी जाता है मुक्ति, जीवन मुक्ति, गति सदगति दाता एक ही है। यह बाप की ही महिमा है। गति सदगति संगम पर ही मिलती है। सतयुग में तो है ही एक धर्म। यह भी समझ की बातें हैं ना। परन्तु यह बुधि देवे कौन। तुम समझते हो बाप ही आकर युक्ति बताते हैं। श्रीमत देते हैं। किसको? आत्माओं को। वह बाप ही सदगुरु भी है, टीचर भी है। ज्ञान सिखलाते हैं ना। बाकी सभी गुरु भक्ति ही सिखलाते हैं। बाप के ज्ञान से तुम्हारी सदगति हो जाती है। फिर इस पुरानी दुनिया से ही चले जाते हैं। तुम्हारा यह बेहद का सन्यास भी है। बाप ने समझाया है अब 84 जन्मों का चक्र तुमीरा पुरा हुआ। अब यह दुनिया खतम होनी है। जैसे कोई बिमार सीरियस होता है तो कहेंगे अब यह तो जाने वाला है। उनको याद कर क्या करेंगे। शरीर तो खतम हो जायेगा बाकी आत्मा जाकर दूसरा शरीर लेती है। उमेद टूट जाती है। बंगाल में तो जब देखते हैं उमेद न है तो गंगा पर जाकर डुबो देते हैं कि प्राण निकल जाये। पहले से ही ले जाते हैं। आत्मा तो निकल गई फिर मुर्दा तो कोई काम का न रहा। मूर्तियों की भी पूजा कर फिर कहते हैं डुब जा। अभी तुम जानते हो यह सारी पुरानी दुनिया डूब जानी है। डूब ही जावेगी। फ्लड्स होंगी, आग लगेंगी। भूख में मनुष्य मरेंगे। यह सब हालतें आनी हैं। अर्थ क्वेक आद में भी मकान आद गिर पड़ेंगे। इस समय तो प्रकृति को गुसा आता है। तो सब को खलास कर देते हैं। यह सब नौबतें सारी दुनिया के लिए आनी हैं। अनेक प्रकार के मौत आ जाता है। बम्स में भी जहर भरा हुआ होता है। थोड़ी वास आने से बेहोश हो जाते हैं। यह तुम बच्चे जानते हो कि क्या2 होने का है। यह सब कौन कराते हैं। बाप तो नहीं कराते हैं। यह ड्रामा में नुंध है। कोई पर दोष नहीं देंगे। ड्रामा का प्लेन बना हुआ है। पुरानी दुनिया सो फिर नई जरूर होंगी। नेचरल कैलेमिटिज़ जरूर होंगी। विनाश होने

का हैं। इस पुरानी दुनिया से बुधि को हटा देना इसको ही बेहद का सन्यास कहा जाता हैं। अब तुम कहेंगे वाह सदगुरु जिसने हमको यह रास्ता बताया। बच्चों को भी समझाते हैं ऐसी चलन न चलो जो उनकी निन्दा हो। तुम यहां जीते जी मरते हो। देह को छोड़ अपन को आत्मा समझते हो। देह से न्यारा आत्मा बन बाप को याद करना हैं। यह भी बाप ही सिखलाते हैं। ऐसे2 देह का भान तोड़ते जाओ। कहेंगे बाबा ने रास्ता बहुत अच्छा बताया हैं। वाह सदगुरु वाह। पारलौकिक सदगुरु की ही वाह वाह होती हैं। लौकिक गुरु तो ढेर हैं। सदगुरु तो एक ही निराकार हैं। हमारा सदगुरु एक ही वह हैं जो हमारा बाप भी हैं। गुरु को कब कोई बाबा नहीं कहेंगे। गुरु बाबा तो एक ही हैं सच्चा2 जिसका फिर भक्ति मार्ग में भी नाम चला आता हैं। वह लोग ब्रह्मा नानक को भी गुरु बाबा कह देते हैं। परन्तु वह तो किसका भी गुरु बाबा हो नहीं सकता। सारी सृष्टि का बाप तो एक ही हैं। नई सृष्टि की स्थापना कैसे होती हैं यह भी किसको पता नहीं हैं। शास्त्रों में तो दिखाते हैं प्रलय हो गई। फिर पीपर के पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। अभी तुम समझते हो सागर में पिपर के पत्ते पर कृष्ण कैसे आवेगा। कृष्ण की महिमा करने से तो कुछ भी फायदा नहीं होता। अभी तुमको तो करना होता हैं वाह सदगुरु। बाकी हुए सब झूठे। उन से तो तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते हो। भक्तिमार्ग में अनेक गुरु करते सीढ़ी उतरते आये हो। अब सदगुरु मिला हैं चढ़ती कला करने। कहते हैं चढ़ती कला तेरे भाने सब का भला। तो रूहानी बाप बैठ आत्माओं को समझाते हैं। 84 जन्म भी आत्मा ने ही लिये हैं ना। हरेक जन्म में नाम रूप दूसरा हो जाता हैं। ऐसे नहीं कहेंगे फलाने ने 84 जन्म लिये हैं। नहीं। आत्मा ने 84 जन्म लिए हैं। शरीर तो बदलती जाती हैं। तुम्हारी बुधि में यह सब बातें हैं। सारी नालेज बुधि में रहनी चाहिए। कोई भी आवे तो उनको समझावें। आदि में था देवी-देवताओं का राज्य। फिर मध्य में रावण राज्य हुआ। सीढ़ी उतरते रहे। सतयुग में कहेंगे सतोप्रधान फिर सतो रजो तमो में आते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम कैसे 84 जन्म लेते आये हैं। कब से शुरु हुआ यह नहीं कहेंगे। बेअन्त हैं। उनका अन्त कब होता नहीं। चक्र फिरता ही रहता हैं। कोई2 कहते हैं बाबा को क्या पड़ी थी जो 84 के चक्र में हमको लाया। अरे यह तो सृष्टि चक्र अनादी अविनाशी हैं। इनके आदि मध्य अन्त को जानना हैं। मनुष्य होकर अगर नहीं जानते तो नास्तिक हैं। जानने से तुमको कितना ऊंच पद मिलता हैं। यह पढ़ाई कितनी ऊंची हैं। बड़ा इम्तहान पास करने वाले के दिल में खुशी होती हैं ना हम बड़े ते बड़ा दर्जा पावेंगे। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो यह ल०ना०राजयोग सिख कर मनुष्य से देवता बनें। इन देवताओं का अधिपति हैं। बाबा ने कल भी समझाया प्रभात फेरी में यह ल०ना० का चित्र भी होना चाहिए। इस पढ़ाई से यह राजधानी स्थापन हो रही हैं। पढ़ाई से कितना ऊंच पद मिलता हैं। वन्डर हैं ना। इतने बड़े2 मंदिर जो बनाते हैं उन्हों से पूछो सतयुग आदि में इन्हों ने जन्म कैसे लिया बता न सकेंगे। तुम ही जानते हो यह तो गीता वाला ही राजयोग हैं। गीता पढ़ते आये हैं परन्तु उन से कुछ फायदा नहीं। अभी तुमको बाप बैठ सुनाते हैं। तुम कहते हो बाबा हम आप से 5000 वर्ष पहले भी मिले थे। क्यों मिले थे। स्वर्ग का वर्सा लेने। ल०ना० बनने लिए। कोई भी छोटे-बड़े बूढ़े आते हैं यह जरूर सिख कर आते हैं। एमआबजेक्ट ही यह हैं। सत्यनारायण की यह सच्ची2 कथा हैं ना। यह भी तुम समझते हो राजाई बन रही हैं। जो अच्छी रीत समझ लेते हैं उनको आन्तरिक खुशी रहती हैं। बाबा पूछेंगे हिम्मत हैं राजाई लेने की। कहते हैं बाबा क्यों नहीं। हम पढ़ते ही हैं नर से नारायण बनने। इतना समय हम अपन को देह समझ बैठे थे। अभी बाप ने हमको राईटस रास्ता बताया हैं। देहीअभिमानी बनने में मेहनत लगती हैं। घड़ी2 अपने नाम रूप में फंस मरते हैं। बाप कहते हैं इस नाम रूप से न्यारा होना हैं। बाप ने यह फिर समझाया हैं तो यह समझ लेते हैं। बाप नाम रूप से न्यारा हैं। अब आत्मा भी नाम तो हैं ना। बाप हैं सुप्रीम। परमपिता। लौकिक बाप को कब परम पिता नहीं कहेंगे। परम अक्षर एक ही बाप को दिया हुआ हैं। वाह गुरु भी उनको कहते हैं। तुम सिख लोगों को भी समझाये सकते हो। ग्रन्थ में तो पूरा वर्णन हैं। और कोई शास्त्रों में

उनको कहते हैं। तुम सिक्ख लोगों को भी समझा सकते हो। ग्रन्थ में तो पूरा बर्णन हैं। और कोई शास्त्रों में इतना बर्णन नहीं हैं। जितना ग्रन्थ जप साहब, सुखमणि में हैं। अक्षर ही दो हैं। बाप कहते हैं साहब को याद करो तो तुमको 21 जन्मों लिए सुख मिलेगा। इसमें मुंझने की कोई बातें नहीं। बाप सहज करके समझाते हैं। कितने हिन्दु ट्रन्सफर हो जाकर सिक्ख बनें हैं। ऐसे नहीं कि सिक्ख आये हिन्दु बने हैं। नहीं। हिन्दु जाकर सिक्ख बनें हैं। ग्लानी भी हिन्दु धर्म की ही हुई हैं। क्रिश्चन हिन्दु नहीं बनेंगे। लाचारी कोई शादी में फंस मरते हैं। काबी हिन्दु बनते नहीं हैं। हिन्दु लोग उन्हों को क्या सिखलावेंगे। यह तो बाप को ही नहीं जानते। ऋषि मुनि आद सब कहते हैं हम नहीं जानते तो नास्तक ठहरे ना। ऐसे2 टोटके निकाल तुम समझा सकते हो। मनुष्यों को रास्ता बताने लिए कितना चित्र बनाते हैं। कितना सहज समझाते हैं। तुम आत्मा हो फिर भिन्न धर्मों में आये हो। यह वेराईटी धर्मों का झाड़ हैं। और कोई को यह पता नहीं हैं कि क्राईस्ट कब आता हैं। बाप ने समझाया हैं नई आत्मा को कर्म नहीं भोगना पड़ता हैं। क्राईस्ट की आत्मा ने कोई विकर्म थोड़े ही किया हैं जो सज़ा मिली। वह तो सतोप्रधान आत्मा आती हैं। जिसमें जाकर प्रवेश किया उनको क्रास पर चढ़ाते हैं। क्राईस्ट को नहीं। वह तो जाकर दूसरा जन्म ले बड़ा पद पाते हैं। पापों का भी चित्र हैं। इस समय यह सारी दुनिया वर्थ नाट अ पेनी हैं। तुम भी थे। अभी तुम वर्थ पाउन्ड बन रहे हो। भल कितने भी बड़े2 पदमपति हैं परन्तु तुम जानते हो कि यह सब तो मिट्टी में मिल जानी हैं। ऐसे नहीं कि उन्हों के वारिस पिछाड़ी में खावेंगे। कुछ भी नहीं। तुम अपने हाथ भर पुर कर जाते हो। बाकी सब हाथ खाली जावेंगे। तुम भर पूर होने लिए पढ़ते हो। यह भी जानते हो जो कल्प पहले आये हैं वह ही आवेंगे। थोड़ा भी सुनेंगे तो आवेंगे। सब इकटठे तो देख भी न सके। तुम ढेर प्रजा बनाते हो। बाबा सब को थोड़े ही देख सकते हैं। थोड़ा बहुत सुनने से भी प्रजा बनते जाते हैं। तुम गिनती भी नहीं कर सकेंगे। शास्त्रों में तो अप्रम बप्रम लिख दिया हैं। सतयुग की आयु अगर इतनी बड़ी हो तो फिर अनगिनत हो जावे। बृधि होती रहती हैं ना। अभी कहते हैं 500 करोड़ हैं। अगर कलियुग की आयु अजन 40 हजार बर्ष हो तो कितने बृधि हो जावेंगे। यह सब बातें तुम समझते हो। तुम सर्बिस पर हो। बाबा भी सर्विस पर हैं। बाबा सर्विस बिगर रह नहीं सकते। रोज सर्विस करने आते हैं। सतसंग आद भी सुबह आद को करते हैं। उस समय सब को फुरसत रहती हैं। बाबा तो कहते हैं तुम बच्चों को बिलकुल सबैर भी नहीं आना हैं। और रात को भी न आना हैं। क्योंकि दिन प्रति दिन दुनिया तो बहुत खराब होती जाती हैं। इसलिए गली2 में सेन्टर ऐसा नजदीक हो ना चाहिए जो घर से निकले और सेन्टर पर आये। सहज हो जाये। तुम्हारी जब बहुत बृधि होंगी तब राजाई स्थापन होंगी। बाप समझाते तो बहुत सहज हैं। हम यह राजयोग की स्थापना कर रहे हैं। बाकी यह सारी दुनिया होंगी ही नहीं। प्रजा तो कितने ढेर बनती जाती हैं। माला भी बननी हैं। मुख्य तो बहुतों की सर्विस कर आप समान बनाते हैं। वह ही माला के दाने बनते हैं। वह लोग माला फेरते हैं परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। बहुत गुरु लोग माला फेरने लिए देते हैं। ताकी बुधि में इसमें लगी रहे। काम महाशत्रु हैं। दिन प्रति दिन बहुत कड़ा होता जाता हैं। तमोप्रधान बनते जाते हैं ना। माताओं के लिए बहुत सहज भी हैं। बाबा ने समझाया हैं अगर जबरदस्ती बांध कर काला मुंह करते हैं तो पतित भी वह बनते हैं। तुम्हारे ऊपर दोष नहीं लगता। तुम्हारी चाहना नहीं हैं तो तुम्हारे पर पाप नहीं लगता। यह दुनिया ही बहुत गन्दी हैं। बाबा को बहुत कहते हैं हम तो तंग हो गये हैं। जल्दी सतयुग में चलें। बाप कहते हैं धैर्य धरो स्थापना होनी ही हैं। यह खातरी करो। यह खातरी ही तुमको लेजावेंगे। **

अच्छा मीठे2 सिकील्धे बच्चों प्रित रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग।

अच्छा मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-: ***ओमशान्ति***:-